संकटमोचन
(महाकाव्य)
संकटमोचन तुम मेरे सुत !
कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह

संकटमोचन : छायावादोत्तर महाकाव्यों का कीर्ति कलश

मैंने डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह विरचित 'संकटमोचन' महाकाव्य के कुछ अंशों का रसास्वादन किया। यह देखकर मुझे अनिर्वचनीय प्रसन्नता हुई कि समस्त काव्य सधी हुई शक्ति से लिखा गया है। कवि की प्रतिभा उसमें पद-पद में झलकती है। कथ्य और शिल्प, दोनों ही दृष्टियों में 'संकटमोचन' लीक से हटकर लिखा गया एक सशक्त और उदात्त महाकाव्य है। कथ्य की दृष्टि से कवि ने कितने ही नवीन प्रसंगों की उद्‌भावना की है और उन्हें मौलिक कल्पना से सजीव और प्राणवान बनाया है। शिल्प की दृष्टि से समस्त महाकाव्य भाषा, छंद और अलंकार के अभिनव प्रयोगों से मंडित है। कवि ने एक अनुभवसंपन्न शब्दशिल्पी के रूप में छायावादोत्तर काव्यभाषा को महाकाव्योचित गरिमा प्रदान की है। खड़ी बोली का जो परिमार्जित परिष्कृत रूप, जो वक्रता, जो भंगिमा, जो विदग्धता, इस काव्य में मिली है, वह अपने आप में हिन्दी की एक बड़ी उपलब्धि है। छंदोलय पर भी कवि को असाधारण अधिकार है। बिना प्रयास किये, भाषा प्रसंगोचित लय में ढलती और समलंकृत होती चली है। सारांशतः 'संकटमोचन' अनुभूति की उदात्तता और अभिव्यक्ति की कलात्मकता से मंडित (छायावादोत्तर) महाकाव्यों का कीर्तिकलश है।

डॉ. अम्बाशंकर नागर
सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग
गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद
संप्रति निदेशक भारतीय भाषा संस्कृति केन्द्र
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद